Q. No भारत में जनसांख्यिकीय संक्रमण (Demographic Transition) तथा उसके आर्थिक प्रभावों की विस्तृत व्याख्या करें |

जनसांख्यिकीय संक्रमण (Demographic Transition) वह प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत किसी देश की जनसंख्या संरचना समय के साथ बदलती है। यह परिवर्तन मुख्यतः जन्म दर (Birth Rate) और मृत्यु दर (Death Rate) में होने वाले बदलाव के कारण होता है। प्रारम्भ में किसी देश में जन्म दर और मृत्यु दर दोनों ऊँची होती हैं, जिससे जनसंख्या वृद्धि बहुत कम होती है। लेकिन जैसे-जैसे देश में आर्थिक विकास, औद्योगीकरण, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं, स्वच्छता तथा जीवन स्तर में सुधार होता है, मृत्यु दर पहले घटती है और बाद में जन्म दर भी कम होने लगती है। अंततः दोनों दरें निम्न स्तर पर स्थिर हो जाती हैं और जनसंख्या वृद्धि नियंत्रित हो जाती है।

भारत ने भी पिछले लगभग 100 वर्षों में इस संक्रमण की प्रक्रिया का अनुभव किया है। आज भारत विश्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है और इसके पास विशाल युवा कार्यशील जनसंख्या है, जो देश के आर्थिक विकास के लिए एक बड़ी शक्ति बन सकती है।

जनसांख्यिकीय संक्रमण का सिद्धांत

जनसांख्यिकीय संक्रमण का सिद्धांत वॉरेन थॉम्पसन (Warren Thompson) तथा फ्रैंक नोटेस्टीन (Frank Notestein) द्वारा प्रस्तुत किया गया था। इस सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक देश आर्थिक विकास के साथ चार मुख्य अवस्थाओं से होकर गुजरता है।

इन अवस्थाओं में निम्नलिखित परिवर्तन होते हैं–

- जन्म दर में परिवर्तन
- मृत्यु दर में परिवर्तन
- जनसंख्या वृद्धि दर में परिवर्तन
- आयु संरचना में परिवर्तन
- जीवन प्रत्याशा (Life Expectancy) में वृद्धि

भारत वर्तमान समय में तीसरी अवस्था (Late Expanding Stage) में है तथा धीरे-धीरे चौथी अवस्था (Low Stationary Stage) की ओर बढ़ रहा है।

भारत में जनसांख्यिकीय संक्रमण की अवस्थाएँ

1. प्रथम अवस्था – उच्च स्थिर अवस्था (High Stationary Stage)

मुख्य विशेषताएँ

- जन्म दर बहुत अधिक होती है।
- मृत्यु दर भी बहुत अधिक होती है।
- जनसंख्या वृद्धि बहुत कम होती है।
- शिशु मृत्यु दर अधिक होती है।
- औसत आयु कम होती है।
- चिकित्सा सुविधाओं का अभाव।
- अशिक्षा, कुपोषण तथा गरीबी अधिक होती है।
- महामारी, अकाल तथा प्राकृतिक आपदाओं का प्रभाव अधिक होता है।

भारत की स्थिति

भारत वर्ष 1921 से पहले इसी अवस्था में था। उस समय चिकित्सा सुविधाएँ विकसित नहीं थीं, स्वच्छता का अभाव था और संक्रामक रोगों के कारण मृत्यु दर अत्यधिक थी।

- आर्थिक प्रभाव
- राष्ट्रीय आय कम थी।
- प्रति व्यक्ति आय बहुत कम थी।
- कृषि उत्पादन कम था।
- औद्योगिक विकास नहीं हो पाया।
- बचत और निवेश की मात्रा कम थी।
- गरीबी व्यापक थी।

2. द्वितीय अवस्था – प्रारम्भिक विस्तार अवस्था (Early Expanding Stage)

इस अवस्था को जनसंख्या विस्फोट (Population Explosion) की अवस्था भी कहा जाता है।

मुख्य विशेषताएँ

- जन्म दर ऊँची बनी रहती है।
- मृत्यु दर तेजी से घटने लगती है।
- जनसंख्या तेजी से बढ़ती है।
- स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार होता है।
- टीकाकरण, स्वच्छता और पोषण में वृद्धि होती है।
- जीवन प्रत्याशा बढ़ती है।

भारत की स्थिति

1921 से लगभग 1981 तक भारत इसी अवस्था में रहा। इस दौरान चिकित्सा सुविधाओं और सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार हुआ, जिससे मृत्यु दर घटी, लेकिन जन्म दर लंबे समय तक ऊँची बनी रही।

आर्थिक प्रभाव

- जनसंख्या में तीव्र वृद्धि।
- रोजगार की समस्या बढ़ी।
- खाद्यान्न की मांग बढ़ी।
- आवास, शिक्षा और स्वास्थ्य पर दबाव बढ़ा।
- गरीबी और बेरोज़गारी में वृद्धि हुई।
- प्राकृतिक संसाधनों पर अधिक दबाव पड़ा।

3. तृतीय अवस्था – उत्तर विस्तार अवस्था (Late Expanding Stage)

भारत वर्तमान समय में मुख्य रूप से इसी अवस्था में है।

मुख्य विशेषताएँ

- जन्म दर धीरे-धीरे कम होने लगती है।
- मृत्यु दर निम्न स्तर पर स्थिर रहती है।
- जनसंख्या वृद्धि की गति कम हो जाती है।
- परिवार नियोजन को अपनाया जाता है।
- महिलाओं की शिक्षा बढ़ती है।
- शहरीकरण और औद्योगीकरण बढ़ता है।
- छोटे परिवार की अवधारणा लोकप्रिय होती है।

भारत की स्थिति

1981 के बाद भारत में जन्म दर लगातार कम हुई है। परिवार नियोजन कार्यक्रम, महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार तथा जागरूकता के कारण प्रजनन दर (Fertility Rate) में कमी आई है।

आर्थिक प्रभाव

- कार्यशील आयु वर्ग की जनसंख्या बढ़ी।
- उत्पादन क्षमता में वृद्धि हुई।
- राष्ट्रीय आय में वृद्धि हुई।
- बचत और निवेश बढ़े।
- उद्योग और सेवा क्षेत्र का विस्तार हुआ।
- आर्थिक विकास को गति मिली।

4. चतुर्थ अवस्था – निम्न स्थिर अवस्था (Low Stationary Stage)

भारत के कुछ राज्य इस अवस्था में पहुँच चुके हैं।

मुख्य विशेषताएँ

- जन्म दर और मृत्यु दर दोनों कम होती हैं।
- जनसंख्या वृद्धि लगभग स्थिर हो जाती है।
- जीवन प्रत्याशा अधिक होती है।
- उच्च शिक्षा और बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध होती हैं।
- परिवार छोटे होते हैं।

इस अवस्था के निकट भारतीय राज्य

- केरल
- तमिलनाडु
- आंध्र प्रदेश
- कर्नाटक
- पंजाब
- आर्थिक प्रभाव
- जीवन स्तर में सुधार।
- उच्च उत्पादकता।
- तकनीकी विकास।
- वृद्ध जनसंख्या में वृद्धि।
- स्वास्थ्य एवं पेंशन पर सरकारी व्यय बढ़ता है।

भारत में जनसांख्यिकीय संक्रमण के आर्थिक प्रभाव

1. जनसांख्यिकीय लाभांश (Demographic Dividend)

भारत की लगभग दो-तिहाई जनसंख्या कार्यशील आयु (15–64 वर्ष) में है। यदि इन्हें शिक्षा, कौशल और रोजगार मिले तो यह आर्थिक विकास का सबसे बड़ा आधार बन सकती है।

लाभ

- उत्पादन में वृद्धि
- राष्ट्रीय आय में वृद्धि
- प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि
- निवेश में वृद्धि
- आर्थिक विकास की गति तेज होती है।

2. रोजगार पर प्रभाव

कार्यशील जनसंख्या बढ़ने से रोजगार की मांग भी बढ़ती है।

सकारात्मक प्रभाव

- उद्योगों को श्रमिक मिलते हैं।
- सेवा क्षेत्र का विस्तार होता है।
- उद्यमिता बढ़ती है।
- नकारात्मक प्रभाव
- बेरोज़गारी बढ़ सकती है।
- शिक्षित बेरोज़गारी की समस्या।
- असंगठित क्षेत्र का विस्तार।

3. बचत और निवेश में वृद्धि

कार्यशील लोग आय अर्जित करते हैं और बचत करते हैं।

इससे–

- पूंजी निर्माण बढ़ता है।
- बैंक जमा बढ़ती है।
- उद्योगों में निवेश बढ़ता है।
- आर्थिक विकास तेज होता है।

4. मानव पूंजी का विकास

कम बच्चों के कारण परिवार प्रत्येक बच्चे की शिक्षा और स्वास्थ्य पर अधिक खर्च कर सकते हैं।

इसके परिणामस्वरूप–

- कुशल श्रमिक तैयार होते हैं।
- उत्पादकता बढ़ती है।
- नवाचार (Innovation) को बढ़ावा मिलता है।
- आर्थिक विकास मजबूत होता है।

5. शहरीकरण

रोजगार की तलाश में लोग गांवों से शहरों की ओर जाते हैं।

लाभ

- औद्योगिक विकास।
- बेहतर शिक्षा।
- आधुनिक सुविधाएँ।
- सेवा क्षेत्र का विस्तार।
- समस्याएँ
- झुग्गी-झोपड़ियों का विस्तार।
- प्रदूषण।
- यातायात की समस्या।
- आवास संकट।

6. कृषि पर प्रभाव

बढ़ती जनसंख्या से खाद्यान्न की मांग बढ़ती है।

इसके कारण–

- आधुनिक कृषि तकनीकों का विकास।
- सिंचाई का विस्तार।
- उन्नत बीजों का उपयोग।
- कृषि उत्पादन में वृद्धि।

7. औद्योगिक विकास

बड़ी जनसंख्या उद्योगों के लिए श्रम और बाजार दोनों उपलब्ध कराती है।

इसके परिणामस्वरूप–

- उत्पादन बढ़ता है।
- निर्यात बढ़ता है।
- विदेशी निवेश आकर्षित होता है।
- नए उद्योग स्थापित होते हैं।

8. उपभोग में वृद्धि

आय बढ़ने के साथ लोगों की आवश्यकताएँ भी बढ़ती हैं।

इससे मांग बढ़ती है–

- मकानों की
- शिक्षा की
- स्वास्थ्य सेवाओं की
- परिवहन की
- बैंकिंग एवं बीमा सेवाओं की
- मोबाइल, इंटरनेट और तकनीकी उत्पादों की

9. आधारभूत संरचना (Infrastructure) पर प्रभाव

जनसंख्या बढ़ने से सरकार को अधिक निवेश करना पड़ता है।

जैसे–

- सड़कें
- रेलवे
- अस्पताल
- विद्यालय
- बिजली
- पेयजल
- इंटरनेट
- आवास

10. महिलाओं की भागीदारी

महिलाओं की शिक्षा बढ़ने और छोटे परिवार होने से महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों में भागीदारी बढ़ती है।

इसके लाभ–

- परिवार की आय बढ़ती है।
- गरीबी घटती है।
- लैंगिक समानता बढ़ती है।
- आर्थिक विकास को गति मिलती है।

11. वृद्ध जनसंख्या की समस्या

भविष्य में जन्म दर कम होने और जीवन प्रत्याशा बढ़ने से वृद्ध लोगों की संख्या बढ़ेगी।

इससे–

- पेंशन पर खर्च बढ़ेगा।
- स्वास्थ्य सेवाओं की मांग बढ़ेगी।
- सामाजिक सुरक्षा की आवश्यकता बढ़ेगी।

12. क्षेत्रीय असमानताएँ

भारत के विभिन्न राज्यों में जनसंख्या वृद्धि की स्थिति अलग-अलग है।

कम जन्म दर वाले राज्य

- केरल
- तमिलनाडु
- कर्नाटक
- अधिक जन्म दर वाले राज्य
- बिहार
- उत्तर प्रदेश
- झारखंड
- मध्य प्रदेश

इसलिए प्रत्येक राज्य के लिए अलग-अलग जनसंख्या एवं विकास नीतियाँ आवश्यक हैं।

जनसांख्यिकीय संक्रमण की चुनौतियाँ

- बेरोज़गारी और अल्परोज़गारी।
- कौशल की कमी।
- ग्रामीण-शहरी असमानता।
- पर्यावरण प्रदूषण।
- प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव।
- गरीबी और आय असमानता।
- शहरी झुग्गियों का विस्तार।
- वृद्ध जनसंख्या की बढ़ती समस्या।
- सुझाव
- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और कौशल विकास को बढ़ावा दिया जाए।
- अधिक रोजगार के अवसर सृजित किए जाएँ।
- महिला शिक्षा और सशक्तिकरण पर विशेष ध्यान दिया जाए।
- स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ बनाया जाए।
- परिवार नियोजन कार्यक्रमों को प्रभावी बनाया जाए।
- कृषि और उद्योग दोनों का संतुलित विकास किया जाए।
- आधारभूत संरचना में निवेश बढ़ाया जाए।
- वृद्ध नागरिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का विस्तार किया जाए।
- संतुलित क्षेत्रीय विकास सुनिश्चित किया जाए।

निष्कर्ष

भारत का जनसांख्यिकीय संक्रमण देश के आर्थिक विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है। वर्तमान में भारत के पास विश्व की सबसे बड़ी युवा कार्यशील जनसंख्या है, जो जनसांख्यिकीय लाभांश (Demographic Dividend) का एक अनमोल अवसर प्रदान करती है। यदि इस युवा शक्ति को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल प्रशिक्षण, स्वास्थ्य सुविधाएँ और पर्याप्त रोजगार उपलब्ध कराए जाएँ, तो भारत विश्व की अग्रणी अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो सकता है। साथ ही, बढ़ती वृद्ध जनसंख्या, क्षेत्रीय असमानताओं, बेरोज़गारी तथा पर्यावरणीय चुनौतियों का समय रहते समाधान करना भी आवश्यक है। उचित नीतियों और प्रभावी क्रियान्वयन के माध्यम से भारत अपनी जनसंख्या को बोझ नहीं, बल्कि विकास की सबसे बड़ी शक्ति में बदल सकता है।